फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत कृषक–वैज्ञानिक–नीति निर्धारक हितधारकों का वार्तालाप आयोजित

दिनांक 27 मार्च 2022 को गाँव कथूरा (सोनीपत) में एक कृषक वैज्ञानिक–नीति निर्धारक हितधारकों का वार्तालाप आयोजित किया गया जिसका की प्रमुख उद्देश्य यह था कि गाँव की सेमग्रस्त जमीन को फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत राज्य सरकार के साथ मिलकर कैसे सुधारा जा सकता है और विभिन्न तकनीकियों जैसे उप–सतही जलनिकास एवं लवण सहनशील धान एवं गेहूँ की प्रजातियों द्वारा कृषकों के खेतों को कैसे उपजाऊ बनाया जाए। इस बहु–हितधारक वार्तालाप के मुख्य अतिथि डा. रणधीर सिंह, सहायक महानिदेशक (कृषि प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली थे। उन्होंने कृषकों से नई तकनीकियों को अपनाने एवं सामुदायिक आधार पर उप–सतही जलनिकास प्रणाली को सहयोग प्रदान करने का अनुरोध किया तथा फार्मर फर्स्ट परियोजना के अच्छे कार्यों की सराहना करते हुए नई तकनीकी जैसे सौर ऊर्जा चालित ट्राली के द्वारा लवणीय जल की पंपिंग को आगे बढ़ाने पर जोर दिया तथा कृषकों के द्वारा विकसित तकनीनिकयों को विज्ञान एवं नीति के साथ जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। इस कृषक गोष्ठी एवं वार्तालाप में लगभग 300 कृषकों तथा राज्य के कृषि प्रसार कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में डा. प्रबोध चन्द्र शर्मा निदेशक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल ने फार्मर फर्स्ट, परियोजना के अंतर्गत किये जा रहे अनुसंधान एवं संस्थान की विभिन्न तकनीकियों का फायदा उठाने के लिये कृषकों को प्रेरित किया। हरियाणा सरकार के डा. देवेन्द्र सिहाग, संयुक्त निदेशक कृषि (मृदा परीक्षण) ने बताया कि गाँव कथूरा में 289 हैक्टेयर सेमग्रस्त जमीन का प्रबंधन उप–सतही जलनिकास तकनीकी के द्वारा कर लिया गया है तथा बची हुई 240 हैक्टेयर जमीन को जल्द ही प्रबंधित कर लिया जाएगा लेकिन इसके लिये गाँव के किसानों का सामुहिक सहयोग मिलना नितांत आवश्यक होगा दिया।

इस कृषक वार्तालाप के दौरान एच. ओ. पी. पी. हरियाणा सरकार की तरफ से आए हुए अधिकारी श्री ओ. पी. गोदारा एवं गोहाना ब्लॉक के उप–खड कृषि अधिकारी श्री राजेन्द्र सिंह ने सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न परियोजनाओं जैसे कि सेमग्रस्त जमीन का पोर्टल पर पंजीकरण, हरी खाद का उपयोग एवं प्राकृतिक खेती के बारे में विस्तार से कृषकों को जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान

फार्मर फर्स्ट परियोजना के अंतर्गत निर्मित महिला स्वयं सहायता समूह को पंजीकरण प्रमाण–पत्र देने के साथ कुल 31 कृषकों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी प्रदान किये गये। गाँव के भूमिहीन कृषकों को मुर्गीपालन के लिये चूजे तथा उनके लिये फीड के कुल 153 सेट भी प्रदान किये गये। गोष्ठी के पश्चात मुख्य अथितियों, वैज्ञानिकों, कृषकों तथा राज्य के अधिकारियों ने फार्मर फर्स्ट परियोजना के अन्तर्गत प्रदर्शित गेहूँ के लवण सहनशील प्रजातियों, लवणीय जल की पंपिंग के लिये सौर ऊर्जा संचालित ट्राली तकनीकी एवं खेतों पर लगाये गये उप–सतही जलनिकास तकनीकी की कार्य क्षमता का अवलोकन भी किया। इस वार्तालाप के दौरान संस्थान के सभी विभागाध्यक्ष तथा परियोजना के वैज्ञानिकों ने किये जा रहे अनुसंधान कार्य एवं आगे की रणनीतियों को कृषकों एवं दूसरे हितधारकों के साथ साझा किया।